पशुपालन उद्योग पर
खुरपका का खतरा

प्रवीण कुमार

चीनी, भारतीय व अन्य एशियाई रेस्तरांओं के लिए अवैध रूप से आयात किया जाने वाला मांस इंग्लैण्ड में खुरपका (फुट एण्ड माउथ) रोग का स्रोत माना जा रहा है।

ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों में पालतू पशु खुरपका रोग की जकड़ में हैं और इस सम्बंध में भारत संदेह के दायरे में है। राजस्थान और हरियाणा में खुरपका रोग के प्रकोप की खबरें मिलने के बाद जॉर्डन, सऊदी अरब और मिस्र ने भारत से मांस के आयात पर प्रतिबंध लगाने की पहल की थी। मिस्र भारतीय मांस का सबसे बड़ा आयातक है और वह प्रति वर्ष 14,000 टन मांस का आयात करता है।

इस रोग का सबसे ज़्यादा असर ब्रिटेन पर हुआ है। वहां 27 मार्च तक 682 मामले सामने आ चुके थे। इस रोग को फैलने से रोकने का सबसे कारगर तरीका रोग ग्रस्त पशुओं का कत्ल कर दिया जाना है। एक अनुमान के मुताबिक रोग को आगे फैलने से रोकने के लिए शायद 10 लाख पशुओं को मारना पड़ा हो। पिछली बार ब्रिटेन में 1967-68 में इस रोग की महामारी के दौरान कई हज़ार पशुओं का कत्ल किया गया था। इस बार भी 21 मार्च तक 2 लाख 70 हज़ार पशु मारे जा चुके थे।

वैसे तो इस रोग के लिए टीका उपलब्ध है किन्तु समस्त जोखिमग्रस्त पशुओं को टीका लगाने की लागत बहुत ज़्यादा है - लगभग 5 पाउण्ड प्रति पशु। इसके अलावा इस टीके से बीमारी का सफाया भी नहीं होगा और शायद इसकी वजह से निर्यात बाज़ार को रोगमुक्त स्थिति में लाने में विलम्ब भी हो सकता है। लिहाज़ा रोग के सम्पर्क में आए समस्त पशुओं को खत्म करना ही रोकथाम का एकमात्र कारगर तरीका माना जा रहा है। सबसे अधिक प्रभावित दो क्षेत्रों - दक्षिण पश्चिम स्कॉटलैण्ड और कुम्ब्रिया में रोग के प्रकोप स्थलों से 3.5 किलोमीटर की परिधि में समस्त पालतू भेड़ें व सुअर कत्ल कर दिए जाने की तैयारी की गई।

इन देशों में ग्रामीण उद्योग व पर्यटन को होने वाले नुकसान को कम करने हेतु सरकारी अभियान भी शुरू किए गए। अखबारों में विज्ञापनों और विशेष टेलीफोन लाइनों पर लोगों को यह सूचना दी गई कि वे देश के किन हिस्सों में सुरक्षित रूप से जा सकते हैं। *द गार्जियन* अखबार ने 28 मार्च के अंक में आशंका व्यक्त की थी कि खुरपका रोग के चलते शायद आम चुनावों की तारीख 3 मई से आगे बढ़ा दी जाए।

ब्रिटेन के कृषि व मत्स्यपालन मंत्रालय में व्यापक रोग वैज्ञानिक प्रोफेसर एण्डर्सन के मुताबिक इस रोग के मई में अपने चरम पर होने और सम्भवत: अगस्त तक जारी रहेगा। 13 मार्च को फ्रांस के मेयन क्षेत्र से भी खुरपका रोग के समाचार मिले। इस रोग के मामले उन फार्मों के आसपास देखे गए जहां फरवरी में ब्रिटेन से भेड़ें आयात की गई थीं। 21 मार्च को नीदरलैण्ड से भी कई मामले रिपोर्ट किए गए।

ब्रिटिश गायों में बी.एस.इ. या 'मैड कॉउ' रोग के पुष्ट मामले

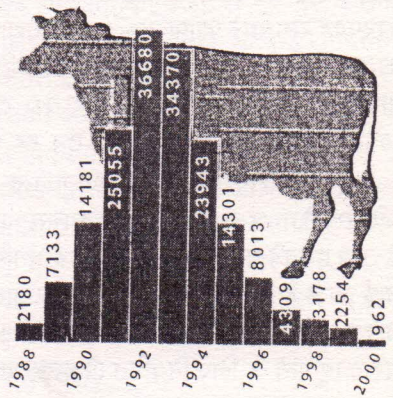

भारत में कृषि-जलवायु सम्बंधी भिन्नताओं व सामाजिक-आर्थिक विविधताओं के चलते और पशुओं की विभिन्न नस्लों की उपस्थिति की वजह से इस बीमारी के प्रसार की अनुकूल परिस्थितियां बनी रहती हैं। भारत में पशुधन की अनुमानित आबादी 50 करोड़ है और खुरपका रोग के 1000 मामले रिपोर्ट होते हैं। इज़्ज़तनगर में स्थित भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के डॉ. एम.पी. यादव के अनुसार, ''भारत ने खुरपका रोग के साथ जीना सीख लिया है।'' भारतीय नस्ल के पशु इस रोग के प्रतिरोधी हैं। यहां यह रोग उत्पादकता पर असर तो डालता है किन्तु आम तौर पर जानलेवा साबित नहीं होता। अलबत्ता, खुरपका रोग का वायरस रक्तस्त्रावी रक्तदूषण के प्रति प्रतिरोध को कमज़ोर कर देता है। इस प्रकार का रक्तदूषण प्रायः जानलेवा साबित होता है।

नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विशेषज्ञों के मुताबिक पिछले दो महीनों में पशुओं की मौतें खुरपका रोग की वजह से नहीं बल्कि रक्तदूषण की वजह से हुई हैं। पश्चिमी देशों में नियम है कि मांस व दुग्ध उत्पादन करने वाले फॉर्म खुरपका से मुक्त हों। लिहाज़ा खुरपका रोग सारे पशुपालकों व मांस उद्योग के लिए एक खतरा है। अरब देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध की वजह से भारत का मांस निर्यात 30,000 टन से घटकर फरवरी 2001 में 15,000 टन रह गया था।

खुरपका रोग, पिकोर्नाविरेडी कुल के *एफ्थो वायरस* जीनस की वजह से होता है। यह वायरस भारत में स्थानीय है तथा इसकी चार प्रमुख किस्में और अनगिनत भिन्नताएं पाई जाती हैं। कई कारणों से, भारत में पशुओं को खत्म करने की नीति नहीं अपनाई जा सकती। यहां इस रोग पर काबू पाने के लिए नियमित टीकाकरण, शीघ्र निदान, पशुओं के आवागमन पर प्रतिबंध तथा संक्रमित पशु को उचित ढंग से ठिकाने लगाने जैसे उपाय अपनाए जाते हैं।

यह बीमारी आम तौर पर फटे खुर वाले जानवरों - गाय, बैल, भैंस, सुअर- को प्रभावित करती है। इंसानों को यह रोग प्रभावित नहीं करता है। यह रोग अचानक तेज़ बुखार के साथ शुरू होता है। इसके बाद मुंह, नरम चमड़ी वाली जगहों, मसलन थनों, पैरों वगैरह पर छाले हो जाते हैं। कभी-कभी नथुनों पर भी छाले हो जाते हैं। लार बहुत ज़्यादा बनने लगती है और पशु कभी-कभी होंठों से चटखारे लेने की आवाज़ भी करता है। खाने में दर्द होने लगता है। चूंकि खुरों की नीचे का नरम ऊतक सूज जाता है इसलिए पशु चलने फिरने से लाचार हो जाता है। कभी-कभी खुर झड़ जाते हैं। मांस के लिए पाले जा रहे पशु दुबले पड़ जाते हैं, दुधारू पशु कम दूध देने लगते हैं। यह रोग प्रायः कम उम्र के पशुओं को आ घेरता है। कभी-कभी गाभिन पशु को गर्भपात हो जाता है।

रोकथाम

खुरपका रोग एक संक्रामक रोग है। यह संक्रमित पशु आहार के माध्यम से या संक्रमित पशु के संपर्क से फैलता है। आम तौर पर यह रोग एक पशु से दूसरे को तब फैलता है जब वे एक-दूसरे के नज़दीक हों। आजकल एक ही जगह पर पशुओं के इतने बड़े-बड़े झुण्ड होते हैं कि संक्रमित पशु की शिनाख्त करना मुश्किल हो जाता है। भेड़ों में यह रोग कुछ ही दिनों तक रहता है। इसके अलावा भेड़ों में लंगड़ाकर चलना आम बात है, इसलिए कई बार इसे रोग का लक्षण नहीं माना जा सकता। ब्रिटेन में आजकल फैल रहे रोग का कारण एक चीनी रेस्तरां का कचरा माना जा रहा है। इस कचरे का उपयोग नॉर्थम्बर लैण्ड के एक सुअर बाड़े में पिग्सविल के रूप में किया जाता है। पिग्सविल दरअसल रसोई से निकला कचरा

होता है जिसे उबालकर एक गाढ़ा द्रव बना लिया जाता है। इसे सुअरों को खिलाया जाता है क्योंकि इनका पाचन तंत्र काफी मज़बूत होता है और वे इसे पचा जाते हैं। पशुपालक इसे इस्तेमाल करते हैं क्योंकि यह सस्ता होता है। स्पॉन्जीफॉर्म एन्सिफेलाइटिस (बी.एस.इ. या 'मैड कॉऊ' रोग) सलाहकार समिति ने सिफारिश की थी कि किसी भी खाद्य सामग्री को उसी प्रजाति में पुनः उपयोग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि (उदाहरण के लिए) संदूषित सुअर के मांस को सुअरों को खिलाएंगे तो हो सकता है कि अन्य सुअर भी बीमार हो जाएं। वैसे 1980 से पिग्सविल के इस्तेमाल पर कठोर पाबंदियां लग जाने से इसका उपयोग बहुत कम हो गया है।

अब इसका उपयोग मुख्यतः पूर्वी एंग्लिया और पूर्वी व उत्तरी यॉर्कशायर के चन्द फॉर्म में ही होता है। आलोचकों का कहना है कि पिग्सविल गौण मुद्दा है। यह संक्रमण तो विभिन्न किस्म के बाहरी मांसों के साथ आया हो सकता है। मसलन बुश रैट, बन्दरों का मांस या सूखी इल्लियां, जिन्हें कुछ खास बाज़ारों के लिए चोरी-छिपे आयात किया जाता है। ब्रिटेन के कृषि मंत्री निक ब्राउन ने संसद में बताया कि गैर-कानूनी मांस ही शायद वर्तमान खुरपका महामारी का स्रोत है। वर्तमान महामारी के आधे मामले तो कुम्ब्रिया के लॉन्गटन तथा वेल्स के वेल्शपूल बाज़ार से उत्पन्न हुए हैं। पशुओं के आवागमन पर प्रतिबंध लगने से पहले होता यह था कि बूचड़खाने पहुंचने से पहले पशुओं को एक बाज़ार से दूसरे बाज़ार ले जाया जाता था ताकि बेहतर दाम मिल सके। कृषि व मत्स्यपालन मंत्रालय (मैफ) के मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी जिम स्कडमोर्फ के मुताबिक वायरस फैलने का एक और कारण 'बेड एण्ड ब्रेकफास्ट' भेड़ें भी हो सकती हैं। किसान लोग अतिरिक्त सब्सिडी प्राप्त करने के लिए एक तरीका अपनाते हैं। जब कोई किसान अपने झुण्ड की कुछ भेड़ें बेचता है, तो वह किसी डीलर को फोन करके कुछ भेड़ें उधार ले लेता है ताकि पूरी सब्सिडी वसूल कर सके। जब विभाग संतुष्ट हो जाता है कि उस किसान के पास झुण्ड में पूरी भेड़ें हैं तो डीलर की भेड़ें वापस भेज दी जाती हैं। ये भेड़ें अपने साथ रोग के वायरस भी ले जा सकती हैं। ब्रिटिश सरकार ने अब पशुओं, खासकर भेड़ों के आवागमन पर कई प्रतिबंध लगा दिए हैं। अब नियम यह है कि भेड़ों को एक फॉर्म पर कम से कम 20 दिन रुकना होगा।

ब्रिटेन के कुछ किसानों का कहना है कि वे पशुओं को कत्ल करने वाले सरकारी दलों को अपने फॉर्म पर नहीं आने देंगे। कुछ किसानों ने अपने पशुओं को राष्ट्रीय उद्यानों के सुरक्षित माहौल में खदेड़ दिया है। पशुवध को कानूनी चुनौती देने की चर्चाएं भी ज़ोरों पर हैं। कार्डिफ स्कूल ऑफ बायोसाइन्स के प्रो.जूलियन विनपेनी का कहना है हज़ारों पशुओं को मारकर जला देने की रणनीति 'आज के ज़माने में क्रूरता' ही कही जा सकती है।

टीकाकरण

ब्रिटेन व अन्य यूरोपीय देशों में इस वायरस के 2 करोड़ टीकों का स्टॉक मौजूद है। संकट के समय रणनीति यह होती है कि समस्त पशुओं को या कम से कम महामारी के केन्द्र के आसपास के सभी पशुओं को टीका लगाया जाए। फिलहाल रणनीति यह है कि महामारी केन्द्रों के समस्त पशुओं का वध करके रोग के फैलाव को रोका जाए। सरकारी पशु चिकित्सा महाविद्यालय के प्रो. जो ब्राउनलाई के अनुसार टीकाकरण के खिलाफ तर्क यह है कि जिन पशुओं को टीका लगेगा, यदि उनका सम्पर्क जीवित वायरस से हो जाए तो वे वायरस के वाहक बन सकते हैं। अर्थात् उनमें रोग के लक्षण तो नहीं दिखेंगे किन्तु उनके शरीर में वायरस बने रहेंगे। किसी टीकाकृत पशु से प्राप्त वायरस से संक्रमित पशु की एण्टीबॉडी को अलग से पहचाना नहीं जा सकता। यह स्थिति सऊदी अरब में देखी गई है। यहां बहुत ही सघनता से टीकाकरण कार्यक्रम चलाया जाता है। फिर भी यहां तीन सालों में दो बार यह रोग फैल चुका है।

टीकाकरण से अल्प समय के लिए ही रोग प्रतिरोध प्राप्त होता है। बार-बार होने वाले प्रकोप और वायरस में पाई जाने वाली विविधता की वजह से नए-नए व संवेदी नैदानिक परीक्षण बनाना ज़रूरी हो जाता है। निदान के लिए नमूने इकट्ठे करने में पशुओं को इधर-उधर करना पड़ता है। जिसकी वजह से बीमारी फैलने का खतरा बढ़ जाता है। इस दिक्कत से बचाव के लिए भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के डॉ.वी.जी.एस. सूर्यनारायण और उनके साथियों ने एक विधि विकसित की है। इसके लिए पशुओं के बाड़े की हवा के नमूने लिए जाते हैं। कहा जाता है कि यह अपनी तरह का पहला परीक्षण है। इससे किसी क्षेत्र में वायरस की मौजूदगी पता चल सकेगी।

(स्रोत विशेष फीचर्स)